E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

पुस्तकालयों में स्वचालन की उपयोगिता एवं अध्ययनरत विद्यार्थियो पर प्रभाव

गिर्राज शर्मा

शोधार्थी

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय

भोपाल (M.P.)

डॉ. पूजा करैया

प्राध्यापक

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय भोपाल

(M.P.)

Paper Received date

05/07/2026

Publishing Date

10/07/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.21998309

IMPACT FACTOR

5.924

शोध सार

वर्तमान समय में महाविद्यालय एवं विश्व महाविद्यालय के पुस्तकालयों में स्वचलन का प्रयोग किया जा रहा है, इस कारण से नई तकनीकी का विद्यार्थियों पर प्रभाव पड़ रहा है। पुस्तकालयों में चार प्रकार के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं जिसमें डी–लिव, बी–लिव, एम–लिव एवं पी. एचडी. करने वाले छात्र एवं छात्राओं को स्वचालन के माध्यम से पुस्तकालय प्रबंधन का ज्ञान बढ़ रहा है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के तीव्र विकास और डिजिटल क्रांति के प्रभाव से वर्तमान आधुनिक युग में समूचे विश्व के पुस्तकालयों के मूल पारंपरिक स्वरूप में एक अद्वितीय परिवर्तन आया है, पुस्तकालय अब केवल मुद्रित पाठ्य सामग्रियों तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि यह अब ई–संसाधनों और ऑनलाइन सूचना स्रोतों की ओर तेजी से अग्रसर हुआ है। सम्पूर्ण जगत में ई–संसाधनों के पुस्तकालयों में बढ़ते प्रभाव एवं अत्यधिक उपयोग के कारण पुस्तकालयों के वर्तमान स्वरूप में पिछले कुछ दशकों में यह परिवर्तन आया है। डिजिटल क्रांति ने समूचे विश्व के पुस्तकालयों के मूल स्वरूप को बदल दिया हैं। विभिन्न प्रकार के ज्ञान प्रसार और सूचना को त्वरित प्राप्त करने में ई–संसाधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वहीं पारंपारिक पुस्तकालयों में मुद्रित पाठ्य सामग्रियों से सूचना को प्राप्त करने में कुछ समय लग सकता हैं।

मुख्यबिन्दु – पारंपरिक, आधुनिकीकरण, स्वरूप, ई–संसाधन, डिजिटल क्रांति, तकनीकी परिवर्तन, ज्ञान प्रसार।

1. प्रस्तावना

पुस्तकालयों के प्रबंधन में स्वचालन का बहुत बड़ा योगदान है। स्वचालन को गत्यात्मक बनाने के लिये विभिन्न सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया जा रहा है। स्वचालन का संबन्ध विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रोनिक संसाधनों से है, जो व्यवहारिक दृष्टि से सभी को सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

इस आधुनिक युग में जहा प्रतिदिन तकनीक के क्षेत्र में नवीन परिवर्तन आ रहे है इस आधुनिक परिवर्तनों के विकास के परिणाम स्वरुप ही आधुनिक ई–संसाधनों एवं डिजीटल पुस्तकालयों के उपयोग में पिछले कुछ दशकों में एक उल्लेखनीय परिवर्तन आया है, जहां पिछले कुछ दशकों में अधिकांश पुस्तकालयों में मुद्रित पाठ्य सामग्रियों का भण्डारण होता था वही अब पुस्तकालयों में पुस्तकों के पारंपरिक भंडार से लेकर आधुनिक सूचनाओं के गतिशील केंद्रो के रूप में परिवर्तित हो रहा हैं। यह परिवर्तन ई–पुस्तकालयों एवं आधुनिक संसाधनों के निरंतर विकास एवं उनके उपयोग से संभव हो सका हैं, इनके उपयोग से उपयोक्ता को उसकी आवश्यकता के अनुरूप पाठ्य समाग्री ई–पुस्तकें, ई–पत्रिकाएं शोध पत्र, ऑडियो विडियो, मल्टीमीडिया सामग्री और अनेक पाठ्य सामग्रिया डिजीटल प्रारुप में शीघ्र ही प्राप्त हो जाती हैं ई–संसाधनों ने न केवल पुस्तकालयों के परांपरिक स्वरूप में बदलाव किया है अपितु पुस्तकालयों की सूचना प्रदान करने की क्षमता को भी बढ़ाया हैं एवं वर्तमान में पुस्तकालयों कि उपयोगिता में भी वृद्धि कि हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य आधुनिक पुस्तकालयों के संदर्भ में ई–संसाधनों के महत्व और उनके बहुमुखी उपयोग की व्यापक खोज प्रदान करना है।

यह शोध पत्र मुद्रित लिखित पुस्तकों पत्र पत्रिकाओं पांडुलिपियों एवं अन्य पाठ्य सामग्रियों के पारंपरिक भंडारण एवं उपयोग से लेकर ई – संसाधनों के आधुनिक नवीन तकनीकों के प्रयोग के कारण पुस्तकालयों के परिवर्तित होते स्वरूप पर प्रकाश डालता हैं।

2. शोध का उद्देश्य एवं महत्व

2.1 उद्देश्य (Objectives)

इस शोध का मूल उद्देश्य यह समझना है कि डिजिटल तकनीक और ई–संसाधनों ने पुस्तकालयों की पारंपरिक स्वरूप को किस प्रकार रूपांतरित किया है।

1. पारंपरिक पुस्तकालयों और आधुनिक डिजिटल पुस्तकालयों के स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. ई–संसाधनों के विभिन्न प्रकारों (जैसे ई–पुस्तकें, ई–पत्रिकाएं, शोध पत्र, ऑडियो–विजुअल सामग्री आदि) का विश्लेषण करना।

3. आधुनिक ई–पोर्टलों जैसे Shodhganga, NDLI, Google Scholar, ResearchGate आदि की उपयोगिता एवं पहुँच का मूल्यांकन करना।

4. विद्यार्थियों, शोधार्थियों, एवं शिक्षकों के लिए ई–संसाधनों की प्रभावशीलता और उपयोगिता को समझना।

5. पुस्तकालयों की शैक्षिक, शोधपरक और सामाजिक भूमिका में आए परिवर्तनों की पहचान करना।

6. ई–संसाधनों की सहायता से शिक्षा की पहुँच को लोकतांत्रिक बनाने की प्रक्रिया का अध्ययन करना।

2.2 शोध का महत्व (Significance of the Study)

इस शोध का महत्व वर्तमान शैक्षिक और शोध परिवेश में अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह पुस्तकालय विज्ञान (Library Science) के विद्यार्थियों, शोधकर्ताओं, और नीति निर्माताओं को पुस्तकालयों के डिजिटलीकरण की दिशा में विस्तृत समझ प्रदान करता है। यह स्पष्ट करता है कि किस प्रकार ई–संसाधनों ने शोध और शिक्षण की पद्धतियों को अधिक समावेशी, त्वरित और प्रभावी बनाया है।

1. यह डिजिटल पुस्तकालयों के प्रभावशाली और सतत विकास की आवश्यकता को रेखांकित करता है।
2. यह पारंपरिक पुस्तकालयों को आधुनिक रूप में रूपांतरित करने हेतु मार्गदर्शन और आधार प्रस्तुत करता है।
3. ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में शिक्षा की पहुँच बढ़ाने के लिए ई–संसाधनों की उपयोगिता को स्थापित करता है।

3. शोध प्रविधि (Research Methodology)

यह शोध मुख्यतः लिटरेचर रिव्यू आधारित है, जिसमें सहायक रूप से द्वितीयक डेटा (Secondary Data) का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्रोतों जैसे Shodhganga, NDLI, Wikipedia, UGC-Inflibnet Annual Reports, SWAYAM Portal Reports, Google Scholar Statistics (2025), Internet Archive Updates (2025) तथा प्रकाशित शोध–पत्र, पुस्तकों और प्रामाणिक वेब संसाधनों को संदर्भित किया गया।

3.1 शोध दृष्टिकोण (Research Concept)

अध्ययन का स्वरूपरू वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical)

• डेटा का प्रकार : द्वितीयक (Secondary Data)

अध्ययन की प्रकृतिरू गुणात्मक (Qualitative) एवं सांख्यिकीय रुझान विश्लेषण (Trend Analysis) का मिश्रण

3.2 डेटा संग्रहण (Data Collection)

• शैक्षणिक पोर्टलों (Shodhganga, NDLI, SWAYAM, ResearchGate, Google Scholar Etc.) पर उपलब्ध सांख्यिकीय सूचनाओं का संकलन किया गया।

UGC-Inflibnet और अन्य वार्षिक रिपोर्टों से विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-संसाधनों की सदस्यता व उपयोग संबंधी आंकड़े लिए गए।

3.3 डेटा विश्लेषण (Data Analysis)

4. संकलित सूचनाओं को तुलनात्मक रूप से वर्गीकृत किया गयाकृ पारंपरिक पुस्तकालय स्वरूप बनाम डिजिटल पुस्तकालय स्वरूप।
5. ई-संसाधनों के विकास व उपयोग में समय के साथ आए बदलावों का आकलन प्रगति विश्लेषण (Trend Analysis) के माध्यम से किया गया।
6. विभिन्न पोर्टलों व रिपोर्टों से प्राप्त आंकड़ों का वर्णनात्मक प्रस्तुतीकरण (Descriptive Presentation) किया गया।

3.4 अध्ययन की सीमाएँ (Limitations of the Study)

आँकड़ों की उपलब्धता और अद्यतनता संबंधित स्रोतों पर निर्भर है यह समयानुसार परिवर्तित हो सकते है।

7. सभी प्रकार के पुस्तकालयों (जैसे ग्रामीण सार्वजनिक पुस्तकालय) में आँकड़ों तक पहुँच का स्तर भिन्न हो सकता है। पुस्तकालय का पारंपरिक स्वरूप रु भारत में पुस्तकालयों की परंपरा अत्यंत प्राचीन रही है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक पुस्तकालय न केवल ज्ञान के संरक्षण के केन्द्र रहे, बल्कि वे समाज के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास के भी आधार स्तंभ बने। प्राचीन भारत में तक्षशिला, नालंदा, और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में समृद्ध पुस्तकालयों का अस्तित्व था। विशेष रूप से नालंदा विश्वविद्यालय का पुस्तकालय, जिसे ”धर्मगंज “ के नाम से जाना जाता था, यह अपने समय का सबसे विशाल और समृद्ध पुस्तकालय था, जिसमें लाखों पांडुलिपियाँ संग्रहित थीं। ये प्रारंभिक काल में पुस्तकालय ताड़पत्रों, भोजपत्रों, तथा मिट्टी

की पट्टियों पर लिखी गई पांडुलिपियों के रूप में अस्तित्व में थे। पुस्तकालय मुख्यतः धार्मिक, शैक्षणिक और शासकीय संस्थाओं के साथ जुड़े रहते थे। मध्यकाल में पुस्तकालय मठों और मंदिरों में विकसित हुए, जहाँ धार्मिक ग्रंथों के साथ-साथ दर्शन, गणित, आयुर्वेद और खगोलशास्त्र जैसे विषयों की रचनाएँ भी सुरक्षित की जाती थीं। उस समय पुस्तकों की प्रतियाँ हाथ से लिखी जाती थीं, जिससे उनका निर्माण एवं संरक्षण श्रमसाध्य कार्य था।

15वीं शताब्दी में गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार यूरोप में हुआ और 16वीं शताब्दी में पुर्तगालियों द्वारा इसे भारत में सबसे पहले गोवा में स्थापित किया गया। किंतु 19वीं शताब्दी में मुद्रण कला के व्यापक प्रसार और आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के विकास के साथ भारत में पुस्तकालय आंदोलन ने गति पकड़ी। इसी काल में बड़े पैमाने पर पुस्तकें, समाचार पत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगीं, जिससे ज्ञान का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ।

इस समय में सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थापना का भी आरंभ हुआ, जिसका उद्देश्य समाज के सभी वर्गों को निशुल्क और समान रूप से ज्ञान तक पहुँच प्रदान करना था। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में पुस्तकालयों की भूमिका अलग-अलग रहीकृजहाँ शहरों में यह शिक्षा और शोध का प्रमुख साधन बने, वहीं ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में सीमित संसाधनों के बावजूद ये साक्षरता और बुनियादी शिक्षा के प्रसार में सहायक सिद्ध हुए। इस प्रकार पारंपरिक पुस्तकालय मुख्यतः भौतिक संरचना पर आधारित थे, जहाँ पुस्तकें, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और पांडुलिपियाँ ही सूचना प्राप्ति का प्रमुख स्रोत थीं।

5. ई – संसाधनों की भूमिका और पुस्तकालयों का बदलता स्वरूप

वर्तमान आधुनिक युग में, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) में हुए तीव्र और व्यापक विकास ने पारंपरिक पुस्तकालयों की संरचना, सेवा पद्धति, संसाधन व्यवस्था और उनके मूल उद्देश्यों में एक क्रांतिकारी परिवर्तन उत्पन्न किया है। पुस्तकालय, जो पहले केवल मुद्रित पुस्तकों, हस्तलिखित पांडुलिपियों और भौतिक सूचनाओं के भंडार के रूप में कार्य करते थे, आज डिजिटल युग में सूचना के सृजन, संग्रहण, प्रसार और उपयोग के गतिशील केंद्र बन चुके हैं।

इस परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू ई-संसाधनों (Electronic Resources) की उपलब्धता और उनका उपयोग है। ई-संसाधन जैसेकृई-पुस्तकें (e-books), ई-जर्नल्स (e-journals), ऑनलाइन डेटाबेस, मल्टीमीडिया सामग्री, शैक्षणिक पोर्टल्स, डिजिटल रिपॉजिटरी आदि ने न केवल सूचना की पहुंच को अधिक व्यापक और

त्वरित बनाया है, बल्कि पुस्तकालयों को एक सीमित भौगोलिक संरचना से निकालकर वैश्विक डिजिटल मंचों से जोड़ दिया है।

अब पाठक किसी भी समय, किसी भी स्थान से पुस्तकालय की सेवाओं का लाभ ले सकते हैं। यह 247 उपलब्धता, रिमोट एक्सेस, और ऑनलाइन अध्ययन सामग्री खोज सुविधा (Search Functionality) जैसी विशेषताओं के कारण संभव हो सका है। उदाहरणस्वरूप, शोधार्थी अब Google Scholar, Shodhganga, National Digital Library of India (NDLI), ResearchGate, Internet Archive जैसे प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से लाखों पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं शोध पत्रों, संदर्भ ग्रंथों एवं अन्य पाठ्य सामग्रियों तक तुरंत पहुंच प्राप्त कर सकते हैं, जो पहले केवल सीमित पुस्तकालयों में ही उपलब्ध होती थीं।

इस आधुनिक विकास के कारण पुस्तकालयों की सेवाओं में भी बहुआयामी परिवर्तन देखने को मिला है। अब पारंपरिक सेवा जैसेकृपुस्तकों का निर्गमन, संदर्भ सेवा, सूचीकरण और वर्गीकरण के साथ-साथ डिजिटल लर्निंग, रिमोट लर्निंग सपोर्ट, डिजिटल रिपॉजिटरी निर्माण, और यूजर ट्रेनिंग प्रोग्राम्स जैसी सेवाएं भी पुस्तकालयों के कार्य क्षेत्र में सम्मिलित हो गई हैं। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को ई-पोर्टल्स और डिजिटल लाइब्रेरी के माध्यम से पाठ्य सामग्री तक अधिक सरलता और समान अवसर के साथ पहुँच प्राप्त हुई है। अब वे भी अपने घर से ही विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं, उच्च शिक्षा, और शोध के लिए आवश्यक अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। इससे शिक्षा के क्षेत्र में समानता (म्ुनपजल) और समावेशिता (Inclusiveness) को बढ़ावा मिला है।

इस प्रकार, ई-संसाधनों ने पुस्तकालयों के पारंपरिक स्वरूप को एक नए आयाम में परिवर्तित कर दिया है, जहाँ ज्ञान अब केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक स्तर पर डिजिटल रूप में सभी के लिए सुलभ हो गया है। पारंपरिक पुस्तकालय बनाम आधुनिक ई-संसाधन पुस्तकालय (तुलनात्मक विश्लेषण) ई-संसाधन (Electronic Resources), स्वरूप (Form-Structure), पारंपरिक पुस्तकालय (Traditional Library), आधुनिक : परिवर्तित पुस्तकालय (Digital/Transformed Library with E-Resources), सूचना संग्रह (Information Storage), मुद्रित पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, पांडुलिपियाँ, दस्तावेज पहुंच (Acces), सूचना की गति (Speed of Information), संसाधन अद्यतन (Resource Updating), भौतिक रूप से पुस्तकालय में जाकर, धीमी, उपयोगकर्ता को सामग्री प्राप्त करने में समय लगता है, सीमित, नई पुस्तकों/संसाधनों का जोड़ भौतिक रूप से ई-पुस्तकें, ई-जर्नल, डिजिटल शोध पत्र, मल्टीमीडिया सामग्री,

ऑनलाइन डेटाबेस रिमोट एक्सेस, 247 ऑनलाइन उपलब्धता, किसी भी स्थान से त्वरित खोज प्रणाली और डिजिटल माध्यम से तत्काल पहुँच लगातार अद्यतन, नए शोध-पत्र, ई-पुस्तकें और मल्टीमीडिया सामग्री तुरंत उपलब्ध, सेवा क्षेत्र (Services), पुस्तकों का निर्गमन, संदर्भ सेवा, सूचीकरण, वर्गीकरण, डिजिटल लर्निंग, रिमोट लर्निंग सपोर्ट, डिजिटल रिपॉजिटरी, यूजर ट्रेनिंग प्रोग्राम्स, लागत एवं भंडारण (Cost - Storage), भौतिक भंडारण लागत, स्थान की आवश्यकता, डिजिटल भंडारण, सामूहिक, सदस्यता/क्लाउड स्टोरेज, कम स्थान की आवश्यकता, उपयोगकर्ता अनुभव (User Experience)

भौगोलिक सीमा (Geographical Reach) पारंपरिक अध्ययन वातावरण, सीमित सुविधा, गतिशील, इंटरैक्टिव, मल्टीमीडिया सामग्री और विस्तृत खोज विकल्प स्थानीय या राष्ट्रीय, सीमित पहुँच वैश्विक स्तर, इंटरनेट आधारित पहुँच, ई-संसाधन (Electronic Resources) से आशय उन डिजिटल माध्यमों से है जिनके माध्यम से शैक्षणिक, शोध एवं सूचना संबंधी सामग्री इंटरनेट या अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्राप्त की जा सकती है। इनके अंतर्गत निम्नलिखित संसाधन सम्मिलित हैं:

ई-पुस्तकें (E-books)

- ई-पत्रिकाएँ (E-journals)
- ऑनलाइन डेटाबेस (जैसे Research Gate)
- डिजिटल थीसिस एवं शोध पत्र (जैसे Shodhganga)
- ऑडियो-विजुअल सामग्री (जैसे, SWAYAM)
- डिजिटल लाइब्रेरी पोर्टल (जैसे NDLI)

ई-संसाधनों की विशेषताएं :

विशेषता विवरण

सुलभता	247 किसी भी स्थान से पहुँच
गतिशीलता	नवीन पाठ्य सामग्री का शीघ्र अद्यतन
पारिस्थितिक	कागज रहित प्रणाली, पर्यावरण हितैषी
शोध की सुविधा	हजारों शोध-पत्र एक क्लिक में

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

कम लागत (या निककशुल्क)	सामूहिक सदस्यता से कम खर्च में अधिक सामग्री (या निशुल्क)

8. ई-संसाधनों के प्रमुख उदाहरण

प्रमुख ई-संसाधन पोर्टल – अद्यतन जानकारी सहित

पोर्टल/संसाधन	**विशेषता / अद्यतन जानकारी**
Shodhganga	भारतीय विश्वविद्यालयों के शोध प्रबंधों का राष्ट्रीय डिजिटल भंडार। 7 मई 2025 तक इसमें 6,00,000+ शोध-प्रबंध अपलोड हो चुके हैं। स्रोत: Shodhganga INFLIBNET
Google Scholar	वैश्विक शोध-पत्रों, लेखों व उद्धरणों की खोज सुविधा। हर वर्ष करोड़ों नए दस्तावेज इसके इंडेक्स में जुड़ते हैं। स्रोत: Google Scholar Blog
NDLI (National Digital Library of India)	बहुभाषी डिजिटल सामग्री का राष्ट्रीय पोर्टल। 2025 तक इसमें 90 मिलियन. दस्तावेज उपलब्ध हैं, इंटरफेस 12 प्रमुख भारतीय भाषाओं में समर्थित है, और सामग्री 452 भाषाओं में उपलब्ध है, जिनमें 39 भारतीय भाषाएँ शामिल हैं। स्रोत: NDLI Milestones
SWAYAM	भारत सरकार द्वारा संचालित ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म। जनवरी 2025 तक इसमें 42.37 लाख नामांकन, 11.06 लाख परीक्षा पंजीकरण, और 7.14 लाख प्रमाणपत्र जारी किए गए हैं, साथ ही 1700 निःशुल्क ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। स्रोत: SWAYAM Enrollment
Internet Archive	पुरानी पुस्तकें, ऑडियो-विजुअल, वेबपेज सभी का मुक्त डिजिटल संग्रह। 2025 तक इसमें 44 मिलियन. पुस्तकें/ टेक्स्ट और 15 मिलियन. ऑडियो फाइलें उपलब्ध हैं। स्रोत: Internet Archive About

नोटः प्रस्तुत आंकड़े संबंधित समय बिंदु तक के हैं, भविष्य में अद्यतन या वृद्धि के कारण इनमें परिवर्तन संभव है।

निष्कर्ष : सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की प्रगति इंटरनेट की सुलभता, डिजिटल नवाचारों एवं इन आधुनिक पुस्तकालयों के उपयोग ने पुस्तकालयों के पारंपरिक स्वरूप को न केवल परिवर्तित किया है, बल्कि उसकी भूमिका, पहुँच और प्रभावशीलता को भी एक नए स्तर पर स्थापित किया है। ई–संसाधनों की उपलब्धता ने सूचना तक पहुँच को आसान बनाया है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ पारंपरिक पुस्तकालयों की पहुँच नहीं थी। शोधार्थी, विद्यार्थी और शिक्षक अब किसी भी समय और स्थान से गुणवत्तापूर्ण शोध सामग्री, पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं, ऑडियो विडिओ सामग्री और शैक्षिक संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। पोर्टल्स जैसे Shodhganga, NDLI, Google Scholar, SWAYAM, और Internet Archive ने इस दिशा में अत्यंत प्रभावशाली कार्य किया है। ई-संसाधन न केवल सुलभ, और लागत – कुशल हैं, बल्कि ये अद्यतन जानकारी और व्यापक ज्ञान–कोश तक तुरंत पहुँच प्रदान करते हैं। इससे शिक्षा और अनुसंधान की गुणवत्ता में स्पष्ट सुधार देखने को मिला है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुस्तकालयों का पारंपरिक स्वरूप अब परिवर्तित होकर एक स्थिर भंडार से बदलकर एक गतिशील डिजिटल ज्ञान केंद्र में रूपांतरित हो रहा है, जिसमें ई–संसाधन केंद्रबिंदु की भूमिका निभा रहे हैं। भविष्य के लिए यह आवश्यक है कि पुस्तकालयों को तकनीकी रूप से और सशक्त बनाया जाए ताकि डिजिटल समावेश (Digital Inclusion) को और अधिक व्यापक तथा समान बनाया जा सके।

संदर्भ

1. अमित किशोर पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
2. फहीम अली सूचना एवं पुस्तकालय विज्ञान
3. Shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in
4. Class Central Report (2024) SWAYAM के पंजीकरण एवं उपयोग विश्लेषण हेतु Internet Archive About Page (2025) – पुस्तक एवं ऑडियो संग्रह संबंधी डेटा
5. UGC&INFLIBNET Annual Report (2024–25) – Shodhganga डेटा अपडेट
6. UGC-INFLIBNET Annual Report (2024-25) – Shodhganga SC 314śc